EFECT OF LOCKDOWN ON HUMAN ANIMAL AND ENVIRONMENT (POETRY)

दावत पर चाइना ने कोरोना को बुलाया

और इसके चलते हमें लोकडाउन में पहुँचाया ॥

लेटकर, सो -सो कर हमने अपनी पीठ को थकाया

जब बाहर चाहा निकलना, पोलिस वालों के डंडों ने सताया ॥

मेरे जैसे कई आसमान के परिंदों को फंसाया

घर को किसी के लिए जेल, तो किसी के लिए नशा मुक्ति केद्र बनाया ।

मोमो, चोमिन, बर्गर, समोसे के स्वाद को सुलाया

घर की सादी सब्जी खा-खा कर बाहर के खाने के टेस्ट को भुलाया ॥

बड़े-बड़े पोलिऊटिड एरिया को, फ्रेश एयर का एहसास करवाया

जालंधर से धौलाधार के पहाड़ों को दिखाया ।

जानवरों को बाहर रोड पर हमें घर की चार दिवारी में बिठाया

नेचर का कहर है ये बोल-बोल कर सुनाया ॥

हमने भी टाइम पास करने के हर तरीके को अपनाया

किसी ने घर पर खाना तो किसी ने कोरोना पर रैप बनाया ।

इक्कीस दिन का है ये लोक डाउन मोदी जी ने समझाया

जो निकले बेवजह बाहर बेचारे उन्हें लाठीचार्ज का अनुभव करवाया ॥

कोलेज स्टूडेंट की ट्रिप ,कहीं लोगों की शादियों को रुकवाया

बिना एग्जाम लिए बच्चों को अगली कक्षा में प्रमोट भी करवाया ।

किसी को बीवी के डंडे ,और हमें माँ -बाप के तानो ने रुलाया

रामायण महाभारत की टी. आर.पी. को बाकि चैनल से ऊँचा उठाया ॥

घर बैठे हर फ्री बर्ड से भगवान् के आगे ये फरमान रखवाया

आज़ादी दे दो परमात्मा इक्कीस सौ रूपये की भेंट आपके मंदिर में चढ़ा आया ।

सब मनुष्यों ने अपनी अंतरात्मा को यह समझाया

इंडिपेंडेंस डे सी फीलिंग होगी हवा में,जिस दिन ये लोक डाउन खत्म, समाचार आया

नाम -राहुल नेगी एडमिशन न. - वी-2016-03-028